

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

रसखान

- रसखान के जीवन के संबंध में सही सूचनाएँ प्राप्त नहीं होतीं, परंतु इनके ग्रंथ 'प्रेमवाटिका' (1610 ई०) में यह संकेत मिलता है कि ये दिल्ली के पठान राजवंश में उत्पन्न हुए थे और इनका रचनाकाल जहाँगीर का राज्यकाल था ।
- जब दिल्ली पर मुगलों का आधिपत्य हुआ और पठान वंश पराजित हुआ
तब ये दिल्ली से भाग खड़े हुए और ब्रजभूमि में आकर कृष्णभक्ति में तल्लीन हो गए ।
- इनकी रचना से पता चलता है कि वैष्णव धर्म के बड़े गहन संस्कार इनमें थे ।
- यह भी अनुमान किया जाता है कि ये पहले रसिक प्रेमी रहे होंगे, बाद में अलौकिक प्रेम की ओर आकृष्ट होकर भक्त हो गए ।

SKG COACHING CENTRE (Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' से यह पता चलता है कि गोस्वामी विठ्ठलनाथ ने इन्हें 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षा दी।

इनके दो ग्रंथ मिलते हैं - 'प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान' ।

'प्रेमवाटिका' में प्रेम-निरूपण संबंधी रचनाएँ हैं और 'सुजान रसखान' में कृष्ण की भक्ति संबंधी रचनाएँ ।

रसखान सवैया छंद में सिद्ध थे ।

जितने सरस, सहज, प्रवाहमय सवैया रसखान के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य हिंदी कवि के हों। रसखान का कोई सवैया ऐसा नहीं मिलता जो उच्च स्तर का न हो।

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

इनकी रचनाओं से मुग्ध होकर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था - "इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिन हिन्दू वारिये ।"

सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्त कवि रसखान हिंदी के लोकप्रिय जातीय कवि हैं । यहाँ 'रसखान रचनावली' से कुछ छन्द संकलित हैं- दोहे, सोरठा और सवैया । दोहे और सोरठा में राधा-कृष्ण के प्रेममय युगल रूप पर कवि के रसिक हृदय की रीझ व्यक्त होती है और सवैया में कृष्ण और उनके ब्रज पर अपना जीवन सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावमयी विदग्धता मुखरित है ।

Mock Test

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

प्रेम-अयनि श्री राधिका

प्रेम-अयनि श्री राधिका, प्रेम-बरन नंदनंद ।
प्रेम-बाटिका के दोऊ, माली-मालिन-द्वन्द्व ॥

मोहन छुबि रसखानि लखि अब दृग अपने नाहिं ।
अँचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं ॥

मो मन मानिक लै गयो चितै चोर नंदनंद ।
अब बेमन मैं का करूँ परी फेर के फंद ॥

SKG COACHING CENTRE (Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

प्रीतम नन्दकिशोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ ।
मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ।॥

करील के कुंजन ऊपर वारौं

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर की तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि नवोनिधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं ।॥

मैं अपनी लकड़ी (साधारण ग्वाले की छड़ी) और कंबल
(साधारण वस्त्र) लेकर तीनों लोकों के राज्य को त्याग दूँ ।

आठों सिद्धियाँ और नौ निधियों का सुख छोड़कर, मैं नंद बाबा
की गायों को चराने में अपना सारा जीवन बिता दूँ ।

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।
कोटिक रौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

कवि रसखान को ब्रज में रहने पर जो सुख मिलता है, वहां के प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने में जो सुख मिलता है, उसे पाने के लिए वह सोने के महलों के सुख को त्यागने के लिए तैयार हैं.

अयनि : गृह, खजाना

बरन : वर्ण, रंग

दृग : आँख

अँचे : खिंचे

सर : वाण

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

मानिक : (माणिक्य) रत्न विशेष
चितै : देखकर
लकुटी : छोटी लाठी
कामरिया : कंबल, कंबली
तिहुँपुर : तीनों लोक
बिसारौं : विस्मृत करूँ, भुला दूँ
तड़ाग : तालाब
कोटिक : करोड़ों
कलधौत : इन्द्र
वारौं : न्योछावर कर दूँ
कुंजन : बगीचा (कुंज का बहुवचन)

SKG COACHING CENTRE(Offline Centre)

VIDEO LINK - <https://youtube.com/live/PaMSvu8FIVg?feature=share>

Question

1. कवि ने माली-मालिन किन्हें और क्यों कहा है ?
2. द्वितीय दोहे का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें ।
3. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है ? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें ।

स्पष्ट करें ।

व्याख्या करें :

(क) मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ।

(ख) रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।